Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2581-6306

वाल्मीकीय रामायण के सुन्दरकाण्ड में निरूपित नारी का चरित्र एवं स्वरूप

पूनम यादव

शोधच्छात्रा,
संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश, भारत

शोध आलेख सार– रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है जो आदिकाव्य के रूप में प्रसिद्ध है। इसमें राम–कथा आधोपरांत वर्णित है। इसमें सात काण्ड हैं– बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुंदरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड। सीता जी का दिव्य स्वभाव त्रिजटा ने ही अन्य राक्षसियों में बताया था। उनमें सीता के शरणागत का ज्ञान कराया था। इस प्रकार सुन्दर काण्ड वास्तव में सुन्दर तथा कल्याण प्रद है।

मुख्य शब्द– चरित्र, स्वरूप, सीता, सुन्दर काण्ड, रामायण, वाल्मीकि, भाव, भाषा–शैली, परिष्कार,

रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है जो आदिभव्य के रूप में प्रसिद्ध है। इसमें राम–कथा आधोपरांत वर्णित है। इसमें सात काण्ड हैं– बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुंदरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड। इसमें लगभग 24 सहस्त्र श्लोक हैं, अतः इसे ''चतुर्विंशति सहस्त्री संहिता'' भी कहते है। यह मुख्यतः अनुख्टुप् श्लोंको में है। भाव, भाषा–शैली, परिष्कार और काव्यत्व के कारण रामायण का स्थान भारतीय काव्यों में सर्वोच्च माना जाता है।[1]

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्याति।।

आदिग्रन्थ के रूप में वेदों को लिया जा सकता है जिसके आदि पहले कुछ न कुछ ही अर्थात् ऋषि वाल्मीकि का रामायण वेद मूलक है जो समाज का वास्तविक चित्रण के साथ–साथ उसका मार्ग दर्शन भी करता है।

वाल्मीकि रामायण में सुन्दरकाण्ड के विषय में कुछ समीक्षक लोग कहते हैं कि– **'किं सुन्दरे किं न सुन्दरम्'**। अर्थात् उनका कहना है कि हनुमान् जी के बाल्यकाल का नाम 'सुन्दर' था इसी कारण सुन्दरकाण्ड को 'सुन्दर' नाम से व्यहत् किया गया है।

सुन्दरकाण्ड में अनेक नारी पात्रों का वर्णन प्राप्त होता है कुछ नारी–पात्र उत्तम कोटि के हैं और कुछ सामान्य आचरण करने से मध्यम कोटि के तथा कुछ चारित्रिक दुर्बलता के कारण कुछ अधम श्रेणी में भी परिगणित हैं।

सुन्दरकाण्ड में महर्षि वाल्मीकि ने जिन नारी पात्रों का वर्णन किया है उनमें भगवती सीता जी का उत्तम चरित है। हनुमान् जी सीता की खोज करने लंका की यात्रा करते हैं, यात्रा के समय हनुमान् जी के मार्ग में अनेक प्रकार की विघ्न् बाधाएँ उत्पन्न हुई, परन्तु हनुमान् जी अपने लक्ष्यमार्ग से विचलित नहीं हुए और उनकी यह सत्य की वीरता बतायी गयी है हनुमान् जी सबसे पहले पूर्वभिमुख होकर अपने पिता पवनदेव को प्रणाम किया। तत्पश्चात् कार्यकुशल हनुमान् जी दक्षिण दिशा में जाने के लिये बढ़ने लगे (अपने शरीर को बढ़ाने लगे)।[2]

अञ्जलि प्राङ्मुख कुर्वन् पवनायत्मयोनयो।
ततो हि ववृधे गन्तुं दक्षिणो दक्षिणां दिशम्।।

पुनः हनुमान् जी लंका जाने के लिए समुद्र को लाँघने की इच्छा से उन्होंने अपने शरीर को बेहद बढ़ा लिया और अपने दोनों पैरों से तथा भुजाओं से उस पर्वत् को दबाया। हनुमान् जी के भार से दबा हुआ महेन्द्रगिरि पर्वत (काले) रंग का जलस्रोत प्रवाहित करने लगा।[3]

निष्प्रमाणशरीर; सँल्लिलङ्घयिषुरर्ण वम्।
बाहुभ्यां पीडयामास चरणाभ्यां च पर्वतम्।।
पीडयमानस्तु वलिना महेन्द्रस्तेन पर्वतः।
रीतिनिर्वर्त्रयामास काञ्चनाञ्जनराजतीः।।

परन्तु हनुमान् का सत्य निम्न श्लोकों से प्रकट होता है।[4]

नहि द्रक्ष्यामि यदि तां लभयां जनकात्माजाम्।
अनेनैव हि वेगेन गमिख्यामि सुरालयम्।।
यदि वा त्रिदेव सीतां न द्रक्ष्यामि कृतभ्रमः।
बद्ध्वा राश्सराजानमानयिख्यामि रावणम्।।
सर्वथा कृत्भर्योऽहममेष्यामि सह सीतया।
आनिष्यामि वा लंका समुत्पाटय रावणम्।।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि सीता का मिलना ग्रन्थ की दृष्टि से सर्वथा महत्त्व रखता है। दूतकार्य में नियुक्त हनुमान् की प्रतिज्ञा से भी सीता का चरित्र स्वयं प्रकाशित हो जाता है। नारी पात्रों में सर्वप्रथम वाल्मीकि ने 'सुरसा' को प्रतिष्ठापित किया है। 'सुरसा' सामान्य रूप से एक सर्पिणी है जैसा कि रामचरितमानस में कहा गया है –

सरसा नाम अहिन्ह के माता।
पठइ न जाइ ..... सो बाता।।

महिर्षि वाल्मीकि की 'सुरसा' नागमाता होने के साथ–साथ इच्छानुरूप शरीर धारण करने वाली है। जो देवताओं के साथ वार्त्ता करके तदनुरूप आचरण करती है कहा जाए तो सुरसा समस्त यौगिक क्रियाओं को जानती

है अथवा तपस्या से सिद्धि प्राप्त कर रखी है 'सुरसा' का नागमाता होने का परिचय सुन्दर काण्ड के इस श्लोक में वर्णित है[5] :–

ततो देवाः सगन्धर्वाः सिद्वाश्च परमर्षयः।
अबुवन् सूर्य संकाशां सुरसां नागमातरम्।।

अतः कहा जाता है कि अनुमान जैसे बुद्धिबलनिधान तेजस्वी का परीक्षण करना आसान काम नहीं था। हमें यह विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए 'सुरसा' का मातृत्त्व उस अवस्था में भी नष्ट नहीं होता। कुछ लोग 'सुरसा' को नागीय सभ्यता की नारी मानते हैं। सुरसा अपने कर्म और उपलब्धि के आधार पर देवलोक (देवकोटि) में परिगणित होती है। सुरसा का स्वरूप सुन्दरकाण्ड के इन श्लोकों में वर्णित है, जो इस प्रकार है[6]

एवमुक्ता तु सा देवी देवतैराभिसत्कृता।
समुद्रमध्ये सुरसा विभ्रती राक्षसं वपुः।।
विकृतं च विरूपं च सर्वस्य च भयावहम्।

वह हनुमान् जी की परीक्षा लेने के लिए राक्षसी रूप धारण कर लेती है यह रूप इतना कुरूप एवं भयानक (वीभत्स) है कि कोई भी मनुष्य या देवता देखकर भयभीत हो जाये। नारी पात्र के रूप में 'सिहिंका' राक्षसी का रूप है। सिंहिका मायाशक्ति से पूर्ण इच्छा–शक्ति रूप को धारण करने वाली है। सिंहिका का चरित्र सुरसा से पृथक् है, सुरसा देवताओं से अनुमोदित होकर परीक्षा लेना चाहती थी वहीं सिंहिका आसुरी (राक्षसी) शक्ति थी तथा वह आकाश मार्ग से विचरण करने वालों में समुद्रतल से छायाग्राही बनकर ग्रास बना लेती थी। जो भी जीव–जन्तु आकाश मार्ग में विचरण करते थे वह उनकी परछाई को ग्रास बनाकर उनका भक्षण कर लेती थी। उसी प्रकार वह हनुमान् जी की छाया को पकड़कर ग्रास बनाने का प्रयास करती है और वह हनुमान् जी की छाया पकड़कर उनकी गति को बाधित कर दिया। महर्षि वाल्मीकि इसके उत्साह का वर्णन किया है[7]

प्लवमानं तु तं दृष्टा सिंहिका नाम राक्षसी।
मनसा चिन्तयामास प्रवृद्धा कामरूपिणी।।
अध दीर्घस्य कालस्य भविष्याम्याहमाशिता।
इदं मम महासत्त्वं चिरस्य वशमागतम्।।

सुन्दरकाण्ड की तृतीय नारी पात्र अद्भुत बलशालिनी राक्षसी है। राक्षसराज रावण जिस पर सबसे अधिक विश्वास करता है वह स्वयं को लंका का पर्याय बताकर सबको आश्यर्च चकित कर देती है। हनुमान् बहुत सावधानी से लंका में प्रवेश करते है फिर भी वह राक्षसी सामने आकर हनुमान् से दृढ़तापूर्वक परिचय पूछती है। परिचय पूछने में ही वह अपने बल का अभिमान प्रकट कर देती है।[8]

कस्त्वं केन च कार्येण इह प्राप्तो वनालय।
कभयस्वेह यत् तत्त्वं यावत् प्राणा धरन्ति ते।।

यहाँ पर एक स्त्री का दुस्साहस देखने योग्य है। इससे ज्ञात होता है कि पुरूष की अपेक्षा स्त्री के बल, पराक्रम, दृढ़ता एवं साहस पर रावण अधिक विश्वास करता था। उस बलशालिनी राक्षसी का बल देखकर ही रावण ने एक स्त्री को लंका के मुख्य प्रवेश द्वार पर प्रतिष्ठापित कर रखा है। इसकी एकाग्रता एवं आत्मविश्वास

देखने योग्य है। उसी समय हनुमान् बिना उत्तर दिए उस नारी से ही परिचय पूछते हैं परिचय देने में गर्वोक्ति तथा निर्भयता का स्पष्ट संकेत प्राप्त होता है।[9]

अहं राक्षसराजस्य रावणस्य महात्मनः।
आज्ञाप्रतीक्षा दुर्धर्षा रक्षामि नगरी भिमाम्।।
सर्वतः परिरश्रामि अतस्ते कथितं यया।।

लंका में जितने प्रवेश द्वार थे सब पर वह एक ही समय में ध्यान रख सकती थी (वह लंका नाम की नारी थी) यह स्पष्ट हो जाता है वह स्त्री वाक्–चातुर्य एवं आत्म प्रशंसा से मोहित होने वाली नहीं थी। उसे अपना सम्मान प्रिय नहीं था सब प्रकार से केवल वह अपने कर्त्तव्य का पालन करती थी और वह अपने स्वामी (रावण) की परम भक्त भी। जैसे– मीरा, राणा की दिवानी थी। उसी प्रकार वह बलशालिनी स्वामिभक्तिनी थी। अतएव कठोर वचन बोलने में संकोच नहीं करती थी। और उस बलशाली राक्षसी ने हनुमान् को सब प्रकार से आश्वस्त कर दिया कि उस बलशालिनी राक्षसी के रहते हुए वह लंका नगरी में प्रवेश नहीं कर सकता।

महर्षि वाल्मीकि ने सुन्दरकाण्ड के प्रमुख नारी पात्र सीता का चरित्र का वर्णन किया है। सीता जी का चरित परम पावन एवं पवित्र है, जिसके गुणों को सुनकर प्रत्येक व्यक्ति धन्य एवं कृतकृत्य हो जाता है। सीता जी का वर्णन कितना भी करूँ फिर भी कम है माँ सीता भगवती के समान है। इसी नारियों के वर्णन क्रम में तो एक नारी पात्र के रूप में ही वर्णन किया जाएगा, परन्तु सीता प्रकृति रूपा दिव्य के पात्र हैं तथा ऐसे पात्र का वर्णन बहुत ही कठिन होता है फिर भी प्रयास मात्र किया जा रहा है।

तालाब में पानी के रहने के कारण कमल–कमल नहीं रह जाता और पूर्णिमा की चाँदनी पर काला बादल घेर लेता है उसी प्रकार सीता पीले रंग के रेशमी वस्त्रों से ढ़की हुई वह मलिन अलंकारशून्य होने के कारण कमलों से रहित पुण्यकारिणी के समान श्रीहीन दिखायी देती थी।

पीत नैकानां संवीतां क्लिष्टेनोत्तमवाससा।
सपङामनलंकारां विपघ्मामिव पद्मिनी।।[10]

सीता जी ने विरहजन्य दुःख से उपवास व्रत धारण कर रखा है; किन्तु उनकी कान्ति (आभा) समस्त दिशाओं को प्रकाशित कर रही थी।

सुख्यर्हां दुःखसंतप्तां व्यसनानामकोविदानाम्।
तां विलोक्य विशालक्षीमधिकं मलिनां कृशाम।।
तर्कयामास सीतेति कारणैरूपापादिभिः।
ह्रिनयभाणा तदा तेन रक्षसा कामरूपिणा।।
यथारूपा हि दृष्टा सा तथारूपेयमंगना।
पूर्णचन्द्राननां सु ....भ्रूँ..... चारूवृन्तपयोधरम्।।[11]

विरहिणी सीता का चरित्र बड़ा ही निर्मल है। सीता रावण की ऐश्वर्य भरी नगरी को देखकर वो कभी भी प्रभावित नहीं हुयी। वे अपने हृदय में एकमात्र राम की प्रतिमूर्ति बसा रखी हैं वह सांसारिक वस्तुओं में थोड़ी भी

आस्था नहीं है सीता जी के रेशमी कपड़े, आभूषण इत्यादि मलिन हो चुके हैं। अपने पीतवर्ण की स्वर्ण सी आभा वाली साड़ी धारण कर रखी है। एक ही वस्त्र धारण करने से मलिन जैसा प्रतीत तो होता है लेकिन उसका रंग थोड़ा भी कम नहीं हुआ है व्यवहारतः रावण ने स्पर्श करके एक स्त्री के सतीत्व पर प्रश्नचिह्न तो लगा दिया है, जैसा चन्द्रग्रहण के दिन चन्द्रमा और सूर्यग्रहण के दिन सूर्य को कलकिंत कर दिया गया है। परन्तु सीता के मन में सतीत्व का भाव बना हुआ है।

भगवती सीता का चरित इतना महान् है कि हनुमान् जी कहते हैं सीता के लिए यदि राम समस्त तल–भूतल और समुद्र, पृथ्वी को भी परिवर्तित कर दें तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में भी उथल–पुथल कर दें, तो भी इसमें कोई दोष नहीं है।

यदि रामः समुद्रान्तां भेदिनीं परिवर्तयेत्।

अरन्याः कृते जगच्चापि युक्तमित्येव में मतिः।।[12]

भगवती सीता के चरित्र से एक आदर्श नारी का चित्रण किया गया है। धर्मशास्त्रों में भी पतिव्रत के लिए कठोर नियमों का निर्देशन किया गया है उन सभी नियमों का निर्देशन किया गया है उन सभी नियमों का भी भगवती सीता विधिवत् पालन कर रहीं है। भगवती सीता ने अपने विरह वियोग के कारण श्रृंगार का त्याग, उपवासव्रत, शोकाकुल तथा पतिपरायणा तथा मन से ध्यान करना इसके अतिरिक्त सीता जी ने उस दुष्ट, पापी रावण का भय (पर पुरूष) है साथ ही अल्पाहार ग्रहण करने से उनका शरीर कृष (दुर्बल) हो गया है। उपर्युक्त समस्त कुलीन नारी के लिए आदर्श है।

सुन्दरकाण्ड में इन नारी (पात्रों) के अतिरिक्त कुछ अधम कोटि की नारियाँ भी है; जो रावण के द्वारा पालित राक्षसीगण है जो मांस, मदिरा इत्यादि का सेवन करने वाली है; उन राक्षसियों में से एक त्रिजटा नाम की राक्षसी भी है, जिसका चरित्र पावन एवं पवित्र है। त्रिजटा भगवती सीता की देखभाल करने के लिए रावण नियुक्त किया था। एक दिन त्रिजटा ने सपने में रावण का साम्राज्य के साथ सम्पूर्ण राज्य (लंका नगरी) के विनाश का चित्र देखा था।

त्रिजटा ने जो भी कुछ सपने में देखा था प्रभू की महिमा सब सत्य (सहीं) हो गया। सीता जी का दिव्य स्वभाव त्रिजटा ने ही अन्य राक्षसियों में बताया था। उनमें सीता के शरणागत का ज्ञान कराया था। इस प्रकार सुन्दर काण्ड वास्तव में सुन्दर तथा कल्याण प्रद है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. वा0 रा0 बालकाण्ड – 2/36/7
2. वा0 रा0 – 5/1/9
3. वा0 रा0 – 5/1/11 और 15
4. वा0 रा0 – 5/1/40–42
5. वा0 रा0 – 5/1/144
6. वा0 रा0 – 5/1/48, 49
7. वा0 रा0 – 5/1/184–187
8. वा0 रा0 – 5/3/23
9. वा0 रा0 – 5/3/28. 30

10. वा0 रा0 – 5/15/21
11. वा0 रा0 – 5/15/27, 28
12. वा0 रा0 – 5/16/13